125th Birth Anniversary of Harekrushna Mahtab

Harekrushna Mahtab, fondly known as "Utkal Keshari," was a stalwart of Indian politics, leaving an indelible mark on the socio-political landscape of Odisha and India at large. Born on November 21, 1899, in the picturesque village of Agarpara, situated in the Bhadrak district of Odisha, Mahtab belonged to a revered Kshatriya family. His early education commenced at Bhadrak High School, where he imbibed the values of service and sacrifice before pursuing higher studies at Ravenshaw College in Cuttack.

Mahtab's political awakening was profoundly influenced by the ideals espoused by Mahatma Gandhi. The fervor of the Indian National Congress (INC) sessions in 1920 prompted him to forsake his academic pursuits and plunge headlong into the freedom struggle in 1921. His journey within the Congress was meteoric, culminating in key leadership roles, including chairmanship of the Balasore District Congress Committee and membership in the Bihar and Odisha Council. Mahtab's involvement in coordinating the boycott of foreign-made goods during the Non-Cooperation Movement earned him the ire of colonial authorities, leading to his arrest on charges of sedition.

The year 1930 witnessed Mahtab's elevation as the president of the Uttar Pradesh Congress Committee, a position from which he drew inspiration from Gandhi's iconic Dandi March to spearhead a successful salt satyagraha in Orissa, resulting in his imprisonment. Subsequently, in 1932, he assumed the mantle of General Officer Commanding Congress Sevadal, the grassroots arm of the INC, further amplifying his influence within the party ranks.

Mahtab's commitment to social justice found expression in his participation in the movement against untouchability in 1934, symbolized by his decision to throw open the doors of his ancestral temple to all. His pivotal role in the Congress Working Committee, nominated by Subhas Chandra Bose in 1938, facilitated his deep engagement with issues of national importance, including the integration of princely states and the Quit India Movement of 1942, during which he endured incarceration in the Ahmednagar Fort Jail until 1945.

The Constituent Assembly elections of Orissa bore testimony to Mahtab's leadership prowess, catapulting him into the august assembly where he played a pivotal role in the integration of Odia-speaking princely states into the province, thus shaping the modern contours of Odisha. His tenure as the inaugural Chief Minister of Odisha from 1946 to 1950 and subsequently from 1956 to 1960 marked a transformative phase in the state's history, characterized by the consolidation of disparate regions and the formulation of policies aimed at fostering socio-economic development.

Mahtab's vision for Odisha transcended mere political boundaries, evident in his relentless pursuit of the merger of princely states sharing geographical, linguistic, and ethnological affinities with the state. The establishment of the Eastern States Union posed a formidable challenge, necessitating deft negotiation skills and strategic maneuvering. The eventual accession of states like Nilgiri underscored Mahtab's pragmatic leadership style, characterized by a judicious blend of firmness and diplomacy.

Furthermore, Mahtab's tenure witnessed landmark infrastructural projects, including the relocation of the state capital from Cuttack to Bhubaneshwar, and the establishment of the Hirakud Dam Project and the Rourkela Steel Plant, emblematic of his commitment to industrialization and economic self-sufficiency, resonating with Gandhi's principles.

However, Mahtab's disillusionment with the Congress party's trajectory under Indira Gandhi's leadership precipitated his departure, leading to the formation of the Orissa Jana Congress (OJC). Despite encountering limited success, Mahtab remained steadfast in his opposition to authoritarianism during the dark days of the Emergency in 1975, an act of defiance that underscored his unwavering commitment to democratic values.

Mahtab's legacy extends beyond the realm of politics. A prolific writer and intellectual luminary, he penned several literary works during his incarcerations, including the novel "Nutan Dharma" and the drama "Swarajya Sadhana." His historical account, "History of Orissa," stands as a testament to his scholarly acumen, while his pioneering efforts in journalism, notably through publications like Prajatantra and Rachana, contributed significantly to the dissemination of Gandhian thought and principles.

Department of Posts is proud to released a Commemorative Postage Stamp on Harekrushna Mahtab on his 125th Birth Anniversary and salutes his unwavering commitment in the welfare of the Nation. His enduring legacy continues to inspire and guide the collective aspirations of the people of Odisha and India.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Sankha Samanta
Text	:	Referenced from content provided by the proponent
Picture in First Day Cover	:	This is a rare picture of Dr. Harekrushna Mahtab with Mahatma Gandhi in 1934 at Berboi-Delang Odisha, provided by the proponent.

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



डॉ. हरेकृष्ण महताब की 125 वीं जयंती

125TH BIRTH ANNIVERSARY OF
DR. HAREKRUSHNA MAHTAB



विवरणिका BROCHURE

हरेकृष्ण महताब की 125 वीं जयंती

ओडिशा एवं समस्त भारत देश के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य पर अपनी अमिट छाप अंकित करने वाले भारतीय राजनीति के दिग्गज हरेकृष्ण महताब, को स्नेहपूर्वक ''उत्कल केशरी'' भी कहा जाता है। हरेकृष्ण महताब का जन्म 21 नवंबर, 1899 को ओडिशा के भद्रक जिले के आगरपडा के एक रमणीक गांव में हुआ था। वह एक प्रतिष्ठित क्षत्रिय परिवार से थे। कटक के रेवेंशॉ कॉलेज में उच्चतर शिक्षा ग्रहण करने से पूर्व उनकी आरंभिक शिक्षा–दीक्षा भद्रक हाई स्कूल में हुई, जहाँ उन्होंने सेवा और बलिदान के गुणों को आत्मसात किया।

महताब ने महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रभावित होकर राजनीति में कदम रखा। वर्ष 1920 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) के सत्रों से प्रेरणा लेकर अपनी शैक्षणिक गतिविधियाँ त्याग दीं और 1921 आते आते पूरी तरह से स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। बहुत ही थोड़े समय में वे कांग्रेस में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते चले गए और बालासोर जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्ष से लेकर बिहार तथा ओडिशा परिषद के सदस्य के रूप में महत्वपूर्ण नेतृत्वकारी भूमिकाएँ अदा कीं। असहयोग आंदोलन के दौरान महताब ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के तमाम कार्यक्रमों का समन्वय किया, जिससे वे औपनिवेशिक अधिकारियों की नजरों में आ गए और उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।

वर्ष 1930 में महताब को उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया, इस पद पर रहते हुए उन्होंने गांधी जी के ऐतिहासिक दांडी मार्च से प्रेरणा लेकर उड़ीसा में नमक सत्याग्रह का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा। तत्पश्चात, वर्ष 1932 में, उन्होंने कांग्रेस के जमीनी स्तर के एक संगठन कांग्रेस सेवादल के 'जनरल ऑफिसर कमांडिंग' का दायित्व संभाला, जिससे पार्टी के भीतर उनका प्रभाव और भी अधिक व्यापक और मजबूत हो गया।

सामाजिक न्याय के प्रति हरेकृष्ण महताब की गहरी प्रतिबद्धता थी। उनकी यह प्रतिबद्धता वर्ष 1934 में अस्पृश्यता के विरुद्ध आंदोलन में उनके द्वारा अपने पैतृक मंदिर के द्वार सभी के लिए खोल देने के उनके निर्णय के रूप में परिलक्षित हुई। वर्ष 1938 में सुभाष चंद्र बोस द्वारा नामित कांग्रेस कार्य समिति में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान उन्हें रियासतों के एकीकरण और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन सहित राष्ट्रीय महत्व के तमाम मुद्दों में अपना अहम योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे वर्ष 1945 तक अहमदनगर किला जेल में बंद रहे।

उड़ीसा संविधान सभा के चुनाव में अपनी नेतृत्व क्षमता का लोहा मनवाते हुए वे उड़ीसा की प्रतिष्ठित विधानसभा में पहुँचे। जहाँ उन्होंने उड़िया–भाषी रियासतों को एक प्रांत के रूप में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और ओडिशा के आधुनिक स्वरूप को आकार दिया। वर्ष 1946 से 1950 तक ओडिशा के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में और तत्पश्चात वर्ष 1956 से 1960 तक मुख्यमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल राज्य के इतिहास में एक परिवर्तनकारी दौर रहा। इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों के एकीकरण का कार्य सम्पन्न किया गया और सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतियाँ तैयार की गईं।

ओडिशा के संबंध में महताब का विजन केवल राजनीतिक सीमाओं में नहीं बंधा था बल्कि वह इससे कहीं बढ़कर था। उनका यह विजन भौगोलिक, भाषाई और नृजातीय समानताएँ रखने वाली रियासतों का ओडिशा में विलय कराने के उनके अथक प्रयासों में स्पष्ट रूप से झलकता है। तत्समय, पूर्वी राज्य संघ की स्थापना एक कठिन चुनौती थी, जिसके लिए विलक्षण संवाद कौशल और रणनीतिक कौशल की आवश्यकता थी। नीलगिरि जैसे राज्यों का ओडिशा में सफलतापूर्वक विलय करवाकर महताब ने अपनी व्यावहारिक नेतृत्व शैली का लोहा मनवाया। उनकी इस शैली विशेषता उनकी वैचारिक दृढ़ता और कूटनीतिक कौशल के विवेकपूर्ण मिश्रण में निहित थी।

इसके अलावा, हरेकृष्ण महताब के कार्यकाल में राज्य की राजधानी को कटक से भुवनेश्वर स्थानांतरित करने का ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुआ और हीराकुंड बांध परियोजना तथा राउरकेला इस्पात संयंत्र की स्थापना सहित बुनियादी ढांचे से संबंधित कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर भी काम हुआ। ये सभी विकासात्मक परियोजनाएं गांधीजी के सिद्धांतों के अनुरूप औद्योगीकरण और आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

कालांतर में, इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी की दिशा–दशा से महताब का मोहभंग हो गया और उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर उड़ीसा जन कांग्रेस (ओजेसी) का गठन किया। उनके इस प्रयास में उन्हें सीमित सफलता प्राप्त होने के बावजूद भी वे वर्ष 1975 में आपातकाल के काले दौर में तानाशाही और सत्तावाद के विरोध में अडिग होकर खड़े रहे। उनके इस विरोध ने लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

महताब की विरासत केवल राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वह एक विपुल लेखक और बौद्धिक व्यक्तित्व के स्वामी भी थे। उन्होंने अपने कारावास के दिनों में उपन्यास ''नूतन धर्म'' और नाटक ''स्वराज्य साधना'' सहित कई साहित्यिक कृतियों की रचना की। ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित उनकी पुस्तक ''उड़ीसा का इतिहास'' महताब की विद्वता का जीवंत प्रमाण है। इसके अलावा, उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष रूप से प्रजातंत्र और रचना जैसे प्रकाशनों के माध्यम से उन्होंने गांधीवादी विचारों और सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार में महती भूमिका निभाई।

डाक विभाग हरेकृष्ण महताब की 125 वीं जयंती पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरवान्वित अनुभव करता है और राष्ट्र के कल्याण के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को नमन करता है। उनकी चिर स्थायी विरासत ओडिशा और भारत के लोगों की सामूहिक आकांक्षाओं के मार्गदर्शक सिद्धान्त के रूप में अनवरत प्रेरणा प्रदान करती है।

आभार :

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे	:	श्री. शंख सामंत
पाठ	:	प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित
प्रथम दिवस आवरण पर अंकित फोटो	:	यह, डॉ. हरेकृष्ण महताब की महात्मा गांधी के साथ दुर्लभ फोटो है, जो वर्ष 1934 में बरबोई–डेलांग, ओडिशा में ली गई थी। यह फोटो, प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध करवाई गई है।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	2,02,800
Stamps Printed	:	2,02,800
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00